ISSN No. : 2394-0344 **REMARKING :** VOL-1 * ISSUE-6*November-2014

छत्तीसगढ़ की लोक नृत्य कला का मूल्यांकन

सीमा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग, यू.टी.डी.
गुरू घासीदास वि"वविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

सांस्कृतिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ में भारतीय संस्कृति पाई जाती है। कई भारतीय प्रदेशों से घिरा भारत का यह नया प्रदेश सीमा से लगे प्रदेशों से प्रभावित है और इन प्रदेशों को छत्तीसगढ़ प्रभावित भी करता रहता है। किसी क्षेत्र की संस्कृति का पता वहाँ के लोक साहित्य से मिलता है। लोक साहित्य से तात्पर्य लोक गीत, लोक नृत्य, लाक–कला, लोकोक्ति आदि से है। किसी अंचल को समझने के लिए उसकी लोक संस्कृति को समझना निहायत जरूरी होता है। अंचल का इतिहास जितना पुराना होता है उसकी संस्कृति उतनी ही समृद्ध होती है। वस्तुतः लोक संस्कृति का संबंध ग्रामीण संस्कृति से है। नगरों और महानगरों में लोक संस्कृति की झलक हमें भले ही मिल जाए लेकिन उसका वृहद् रूप गांवों में ही मिलता है। कलाओं की शरूआत जन अपेक्षाओं के अनुसार ही होती है। कला जीवन से जुडो होती है। कुछ समूह अपनी परंपरागत कलाओं को छोड़ने के लिए तत्पर नहीं होते। सामान्यतः आदिवासी समूह में यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है। छत्तीसगढ़ आदिवासी बहुल क्षेत्र है अतः यहाँ की संस्कृति में भी प्राचीनता की छाप दिखाई देती है। यहाँ के नृत्य और गीतों में उनका जीवन के प्रति उत्साह साफ दिखाई देता है।

मुख्य शब्द : लोकनृत्य, छत्तीसगढ़, सभ्यता।

प्रस्तावना

मनोरंजन के साधनों में नृत्य का प्रमुख स्थान रहा है। वात्स्यायन ने अपने ग्रंथ कामसूत्र में 64 कलाओं में नृत्य को भी एक कला माना है। छत्तीसगढ़ के आदिवासियों के जीवन में लोक नृत्यों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। श्रीमती कमला देवी चटोपाध्याय ने लिखा है – ''जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी सामाजिक अवसरों पर नृत्य का आयोजन किया जाता है। वस्तुतः समाज के किसी मौके को ऐसे समारोहों के लिए कम महत्वपूर्ण नहीं कहा जा सकता। ऋतु परिवर्तन, धार्मिक त्यौहारों, विवाह और आखेट आदि में शायद ही नृत्य के बिना काम चल पाता है।''[3] जहाँ तक बस्तर का प्रश्न है, वहाँ के आदिवासी का प्रश्न है, नृत्य उनके तनाव दूर करने का, मनोरंजन का एक सुलभ साधन ह। सामूहिक नृत्य बस्तर की विशेषता है। नृत्य यहाँ एकता के सूत्रों को पक्का करने वाला एक महत्वपूर्ण उपादान है।[4]

गंवर नृत्य (गौर नृत्य) मड़िया जनजाति का लोकप्रिय नृत्य है। वेरियर एल्विन, इसे संसार का सबसे सुन्दर नृत्य कहते हैं। गंवर का अर्थ वनभैंसे से है। युवकों के गंवर (गौर) वन पशु (वन भैंसा) और कौड़ी से सजा हआ मुकुट पहनने के कारण पड़ा। मेले मड़ई में यह नृत्य मुख्यतः दिखता है। युवतियाँ पीतल मुकुट धारण कर लौह छड़ रखती हैं।[10] दिनों तक चलने वाली दंतेवाड़ा की प्रसिद्ध फागुन मड़ई का आयोजन फागुन शुक्ल षष्ठी से पूर्णिमा तक होता है। चौथे दिन चौथी पालकी माइजी के मंदिर से नारायण मंदिर पहुंच कर विधिवत् पूजा अर्चना और दूसरी रस्म अदायगी के बाद देर शाम मंदिर लौट आती है। इसके बाद शिकार नृत्यों की परंपरा में लमहा नृत्य का आयोजन होता है। हलवी भाषा में लमहा खरगोश को कहते हैं। पांचवे दिन पंचम पालकी म कोडरी भार की रस्म अदा की जाती है। कोडरी शब्द का अर्थ हिर होता है। शिकार से जुड़ी ये रस्में बस्तर के आदिम समुदाय और राजा महाराजाओं के 'ाासनकाल में प्रचलित रहे हैं। फागुन मड़ई की छठवीं पालकी में चीतल है। सातवें दिन गंवर–भार जैसी महत्वपूर्ण रस्म होती है। इसमें रात के अंतिम प्रहर में गंवर के शिकार को दिखाया जाता है। फागुन मंड़ई में संपन्न होने वाले शिकार नृत्यों में गंवर मार सबसे लोकप्रिय है। बस्तर में पाए जाने वाले दुर्लभ प्रजाति के वन भैंसा को स्थानीय हल्बी बोली में गंवर कहा जाता है। फागुन मंड़ई में होने वाले शिकार नृत्यों में गंवरमार नृत्य रस्म सबसे अलग है। इसमें समर्थ परिवार का व्यक्ति गंवर बनता है और इस गंवर का प्रतीकात्मक शिकार मंदिर के पुजारी द्वारा बंदूक से हवाई फायर किया जाता है। गंवरमार में गंवर तैयार करने के लिए उपयोग में लाये गये बांस का ढांचा और ताड़ फलंगा धोनी में प्रयुक्त ताड़ के पत्तों से होली सजाई जाती है।5

गुजरात के डान्डिया नृत्य की भांति बस्तर की भतरा जनजाति का डन्डारी नृत्य होता है। कमर में बंधे लकड़ी के ठुड़का को नाचते समय हाथ मे रखे डंडे से बजाया जाता है। शहनाई के साथ मिल कर इसकी आवाज मधुर सुनाई देती है। एक दूसरे के डंडों को भी टकराया जाता है। भतरी गीत के साथ यह होता है। धुरवा नृत्य की प्रमुख वि"ाषता नर्तकों के कंधे पर सवार होकर नर्तकों का समूह पिरामिड बनाते हैं। महिला नर्तक पिरामिड के नीचे से नाचती हुई अंदर–बाहर होती है। गीत भी गाती है। धुरवा बुजुग नौजवानों को इस नृत्य का प्रशिक्षण गुरगाल द्वारा देती ह।[6]

बस्तर का लोकप्रिय नृत्य जालियाना है। मुरिया, महरा के अलावा अन्य जाति के लोग भी इसे करते हैं। गीतों के माध्यम से प्रश्नोत्तर होते हैं। हर खुशी के मौके पर यह होता है। विवाह, मेले, मड़ई पर इसे देखा जा सकता है। मनोरंजन के लिए यह होता है इसका कोई धार्मिक पक्ष नहीं होता। युवतियाँ सजधज कर युवकों के साथ नाचती हैं। एक दूसरे की कमर पकड़े 8–10 युवक–युवतियों का समूह, गोल घेरा बनाते हैं। शहनाई बजती है। हलवी–भतरी गीत गाए जाते हैं।

गेंड़ी नृत्य भी अबूझमडिया और मुड़िया लोगों का पुरूष नृत्य है। यह गेंड़ी पर किया जाता है। गेंड़ी बांस/काष्ठ हस्तशिल्प से बनती है। हरेली अमावस्या को गेंड़ी बनाया जाता है। लोकनृत्यों में गेंड़ी का महत्व है। इसमें टिमटी बजाई जाती हैं, परन्तु इसमें गीत नहीं होता।[7] गेंड़ी से नृत्य के अलावा कीचड़ में चलने का आनंद, गेंड़ी–लड़ाई भी की जाती है। गेंड़ी दौड़ भी आकर्षक होती है। गेंड़ी को घोडोन्दी भी कहा जाता है। गेंड़ी नृत्य संतुलन बनाए रखने का सुन्दर प्रदर्शन होता है। युवकों का ही नृत्य है। ककसाड़ नृत्य अबूझमाड़िया ओर मुड़िया जनजाति का नृत्य है। यह जात्रा नृत्य है। आंगादेव के सम्मान में यह नृत्य होता है। यह रात में किया जाता है। महिलाएं झूलों के रूप में मोती और सीप की माला धारण करती हैं। ककसाड़ नृत्य में नर्तक कमर में पांच किलो तक के असंख्य छोटे–छोटे घुंघरू बांधे होते हैं। इसे नाचते समय बजाया जाता है। इस नृत्य में ढोल, अंकुम, टिमकी आदि वाद्य यंत्र बजाए जाते है।[8] इस नृत्य के दौरान नर्तक और नर्तकियों का झुण्ड कभी–कभी दूसरे गांवों में विवाह घर में पहच जाता है और नृत्य करता है। इस नृत्य के दौरान अनेक युवक–युवतियाँ अपने जीवन साथी का चुनाव भी कर लेते हैं। चंदैनी नृत्य छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में लोककथाओं पर आधारित यह एक महत्वपूर्ण लोकनृत्य है। लारिक चंदा के नाम से ख्यातिलब्ध चंदैनी मुख्य रूप से एक प्रेमगाथा है। जिसमें पुरूष पात्र विषे"ा पहनावे में अनूठे नृत्य के साथ चंदैनी कथा को बहुत ही सुन्दर सम्मोहक 'ौली में प्रस्तुत करते हैं।

छत्तीसगढ़ में चंदैनी दो शैलियों में विख्यात है एक तो लोककथा के रूप में एवं द्वितीय गीत नृत्य के रूप में। चंदैनी नृत्य में मुख्य रूप से ढोलक की संगत की जाती है और टिमकी प्रमुख वाद्य यंत्र होता है। छत्तीसगढ़ में चंदैनी नृत्य की ख्याति अत्यधिक थी।

हुलकी व मांदरी नृत्य मुरिया आदिवासियों में प्रचलित है। हुलकी नृत्य में युवक मांदर (ढोल) लटकाए रखता है। नर्तक बांयी ओर ढाल एक लकड़ी के सहारे और दांयी ओर हथेली से मांदर बजा–बजा कर नृत्य करता है। दण्डामी माड़िया नर्तकियों का नृत्य है। इसमें वे दाहिने हाथ में बांस की छड़ी लेती हैं जिसे तिरूहुड़ी कहते हैं। नर्तकी इसे बजा–बजा कर नृत्य करती हैं। परघौनी नृत्य आदिवासियों के विशेष अवसर और अनुष्ठान से संबंधित होते हैं। बैगा आदिवासियों में परघौनी नृत्य विवाह के अवसर पर बारात को अगवानी के समय किया जाता है।[9] नगाड़ा और टिमकी इसका प्रमुख वाद्य यंत्र है। कृत्रिम हाथी बनाकर समधी को इस अवसर पर नचाया जाता है। जिसमें आनंद और उल्लास की अभिव्यक्ति प्रमुख है। हाथी बनाकर आंगन में नचाने का अनु"ठान भी यह संकेत करता है कि इसमें प्रसन्नता की अभिव्यक्ति के प्रमुख्य ध्येय है।

बिलमा नृत्य गाड़ और बैगा जनजाति के लोग दशहरे पर करते हैं। नवयुवक और नवयुवतियाँ सजधज कर नृत्य करते एक दूसरे के गांवों में जाते हैं। इसमें कुंवारी लड़कियाँ वर को भी चुनती हैं। फाग नृत्य भी गोंड़ और बैगा जनजाति के लोग दशहरे पर करते हैं। हाथ के बनाये हुए मुखौटे और लकड़ी की चिड़िया का उपयोग किया जाता है। थापटी नृत्य कोरकू जनजाति का नृत्य है। पुरूष पंचा आर महिलाएं चिटकोटा बजाती हैं। ढोलक और बांसुरी इसके प्रमुख वाद्य हैं।[10] घसिया बाजा/गोण्ड बाजा नृत्य सरगुजा जिले से सुदूर ग्रामीच अंचल में रहने वाली घासी जाति–गांड़ा जाति का यह परंपरागत नृत्य एवं आजीविका का साधन है। इसमें लौहाटी, शहनाई, टिमकी और डफला आदि वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। सरगुजा की जनजातियों के लिए इस वाद्य यंत्र का बहुत महत्व है। दमनच नृत्य करमा नृत्य के समान है। पहाड़ी कोरबा जनजाति में प्रसिद्ध यह नृत्य विवाह के अवसर पर किया जाता है। मृदुगली ताल पर हो रहे इस नृत्य के साथ मधुर गायन भी होता है। दोरला नृत्य बस्तर की दोरला जनजाति का प्रमुख नृत्य है। इस नृत्य में स्त्री पुरूष दोनों सहभागी रहते हैं। मुख्य रूप से यह एक पारंपरिक नृत्य है जिसमें पुरूष गमछा, रूमाल और स्त्रियाँ पारंपरिक आभूषण पहनती है। दोरला नृत्यों का प्रमुख वाद्य यंत्र विशेष प्रकार का ढोल होता है। कोलदहका नृत्य कोल आदिवासियों का पारंपरिक नृत्य है। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में यह नृत्य प्रायः देखा जा सकता है। इस नृत्य में स्त्रियों का नृत्य पुरूषों का ढोलक वादन प्रमुख है। इसमें पुरूष वादक और गायक दोनों की भूमिका निभाते हैं।

परब नृत्य घुरबा जनजाति का लोकप्रिय नृत्य माना जाता है। इस नृत्य में विशेष करतब का प्रदर्शन उल्लखनीय है। इस नृत्य में स्त्री पुरूष सम्मिलित रूप से हिस्सा लेते हैं। पुरूषों की वेशभूषा में सफेद लहंगा, सलूखा और आकर्षक पगड़ी और सिर पर मोर पंख लगाते हैं। स्त्रियाँ सफेद साड़ी, माथे पर पट्टा और परों में घुंघरूओं और वि"ाष सज्जा के साथ एक कतार में होकर नृत्य करती हैं।

घसिया बाजा/गाण्डा बाजा नृत्य सरगुजा जिले से सुदूर ग्रामीच अंचल में रहन वाली घासी जाति–गांडा जाति का यह परंपरागत नृत्य एवं आजीविका का साधन है। इसमें लौहाटी, शहनाई, टिमकी और डफला आदि वाद्य यंत्रों का प्रयाग किया जाता है। ग्रामीण लोग शादी–विवाह एवं तीज त्यौहारों पर इन्हें किराये पर ले जाते हैं। सरगुजा की जनजातियों के लिए इस वाद्य का उतना ही महत्व है, जितना कि शहरों में बैंड पार्टी का। दमनच नृत्य हुलकी पाटा घोटुल का सामूहिक मनोरंजन गीत है। इसे अन्य सभी अवसरों पर भी किया जाता ह। इसके गीत नृत्य के प्रमुख आकर्षण होते हैं। हुलका पाटा मुरिया कल्पनाओं का व्यावहारिक गीत है।[11]

करमा नृत्य छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य है जो इस क्षेत्र की कई जनजातियों में प्रचलित है। करमा नृत्य और गीत अंचल के विस्तृत क्षेत्र में अन्य क्षेत्रीय नृत्यों के बीच में भी नाचा व गाया जाता है। जैसे–मड़ई मेला, विवाह, नवाखानी, पितृमोक्ष आदि अवसरों पर लोकगीत गाये जाते हैं। उनमें भी करमा नृत्य बीच–बीच में किया जाता है।[12] करमा नृत्य की, गीत की कई धुनें होती हैं। एक धुन झूमर भी होती है जिसे गाते–गाते लोग सचमुच झूम उठते हैं। करमा को छत्तीसगढ़ी लोक गीतों का राजा माना गया है।[13] करमा मुख्यता नृत्य गीतों की श्रेणी में आता है। करमा नृत्य जनजीवन के हृदयगत उल्लास को दर्शाते हैं। करमा नृत्य–गीतों में उल्लास, मस्ती, समरता व संगीत का अद्भुत मिश्रण पाया जाता है।[14] करमा गीत श्रृंगार प्रधान होते है। इसके अलावा करमा में सरस्वती, गणेश, गौरी का स्मरण भी किया जाता है। वस्तुतः करमा गीत में संस्कृति के बोल और नृत्य में जीवन का उल्लास होता है।[15] करमा गीत और नृत्य जिस जगह पर होता है उसे अंखरा कहते है।[16]

राउत नाचा, राउत समुदाय द्वारा किया जाता है। यह नृत्य दीपावली के तुरंत बाद राउतों द्वारा सामूहिक रूप से किया जाता है। राउत समूह में घूमते हुए सिंग बाजा के साथ गांव, शहरों में पषुधन के मालिक के घर में जाकर नृत्य करते हैं। राउतों के लिए यह एक बड़ा वार्षिक पर्व है स्थानीय लोगों को इसमें उत्साहित होने का मौका मिलता है। पशुधन के मालिक इन्हें 10–20 दिनों तक काम से मुक्त कर देते हैं। इस अवधि में वे नाचा–गाना का उत्सव करते हैं। देवउठनी, पुन्नी पूर्णिमा के दिन गायों को सोहई बांधते व अपने सुमधुर कंठ से मालिक की सुख समृद्धि की कामना करते हुए दोहे गाते हैं। इस अवसर पर राउत वि"ाष्ट परिधान पहनते है। गड़वा बाजा इस नृत्य का प्रमुख वाद्य यंत्र है।[17] पंथी नृत्य छत्तीसगढ़ में निवास करने वाली सतनामी जाति का परंपरागत नृत्य है। माघ महीने की पूर्णिमा का गुरू घासीदास के जन्म दिन पर सतनामी संप्रदाय के लोग यह नृत्य करते हैं। इस पंथ से पंथी संज्ञा बनी। मांदर और झांझ इसके प्रमुख वाद्य है। यह तीव्र, गतिशील और लय प्रधान नृत्य है। घासीदास क जीवन चरित्र की गाथा, उसके उपदेश भजन के रूप में सतनाकी समाज के लोग गाते हैं।[18] नृत्य का आरंभ तो विलम्बित गति से ही होता है, पर लय प्रतिफल द्रुत होती है और समापन नृत्य की चरम द्रुतगति पर होता है।

सुवा नृत्य छत्तीसगढ़ का सबसे लोकप्रिय नृत्य है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र की महिलाएं व किशोरियाँ यह नृत्य बड़े ही उत्साह व उल्लास से उस समय प्रारंभ करती है जब छत्तीसगढ़ की मुख्य फसल धान पक जाती है। यह नृत्य दीपावली के कुछ दिन पहले शुरू होकर दीपावली के दिन खत्म होता है। इसमें एक टोकरी में मिट्टी से बने दो सुआ शिव और गौरी के प्रतीक के रूप में रखे जाते हैं साथ ही धान की बालियाँ रखी जाती है। फिर इसे घेर कर गोल–गोल घूमते हुए व झूम कर ताली बजाते हुए सुआ गीत गाया जाता है।

सैला नृत्य आदिम जातियो में प्रचलित है। गोंड़ जाति के पुरूषों का यह वीर नृत्य है। सैला का एक अर्थ डंडा भी होता है। राम द्वारा रावण को परास्त किए जाने के उपलक्ष में यह नृत्य प्रारंभ हुआ। गोंड़ों ने राम का साथ दिया था, यह इस नृत्य से पुष्ट होता है। इस नृत्य का पूरा नाम सैला–टीना है। इस नृत्य की शुरूआत शरद पूर्णिमा से होती है। सैला मुख्य रूप से गोंड़, बैगा, परधान आदि जनजातियों में किया जाता है।[19] नृत्य के समय नर्तक अपने बगल के नर्तक के डंडे पर अपना डंडा मारता है। सभी डंडे एक साथ टकराते हैं जिससे घस–घस की मधुर ध्वनि निकलतो है। यह सरगुजा का लोकप्रिय जनजातीय नृत्य है जो दषहरे एवं धान की कटाई के बाद शुरू होता है। इसमें केवल पुरूष डंडा लेकर समूह में नृत्य करते हैं।[20] वीर रस से भरा यह नृत्य भारतीय वीरता का प्रतीक है। यह नृत्य प्राचीन काल में वीरोचित भावना उत्पन्न करने और होन भावना को दूर करने के लिए किया जाता रहा है।[21]

इस प्रकार लोक नृत्य प्राकृतिक नृत्य है। लोक जीवन में जब और जहां भी उत्साह का क्षण आता है, वहां उसके अनुकूल किसी न किसी प्रकार के नृत्य का रूप प्रकट होने लगता है। इन लोक नृत्यों म कला तो स्वाभाविक होती ह। अतः आदिवासियों का लोकनृत्य अधिक सषक्त होता है। न केवल आदिम जातियों में अपितु लोक नृत्य तो देश के हर क्षेत्र के लोक जीवन में होता है। सभ्य से सभ्य जातियों में लोक मानव का एक अंष रहता है। लोक नृत्य का विषय जीवन ही होता है। साधारण लोक नृत्य सामूहिक ही होते हैं। जीवन और प्रकृति से घनिष्ठ रूप से संबंधित होने के कारण लोक नृत्य का रूप से संबंधित होने के कारण लोक नृत्य का रूप किसी वर्ग के अपने व्यवसाय के अनुकूल हो जाता है। प्रत्येक लोकनृत्य की अपनी–अपनी वि"ाषता है जो विशेष अवसरों पर सम्पन्न होती है। इसके अलावा छत्तीसगढ़ का लोकनृत्य एक अनुशीलन का विषय है।

संदर्भ –

1. पांडेय मुकुटधर, छ.ग. की लोक संस्कृति, मध्यप्रदेश संदेष, अंक–9, नवबर 1974, पृष्ठ–19.
2. वर्मा सुशील चंद्र, यह सुनहरा छत्तीसगढ़, लेख छत्तीसगढ़ की अस्मिता, पृष्ठ–35
3. चटोपाध्याय कमला देवी, भारतीय लोक नृत्यों की परंपरा, पृष्ठ–37.

4. डॉ. बेहार रामकुमार–आदिवासी बस्तर इतिहास व परम्परायें, पृष्ठ–84.
5. http//utichoicegov.in/special-news/905928942920940-92a93093e913902-938947-939947-930902917940-979948-9269029249479,3593e915940-92b93e917941928-92e90292108/Searchterm=None
6. डॉ.बेहार रामकुमार–उपरोक्त, पृष्ठ –89.
7. http//uti choice gov.in/special-news-mijksDr
8. डॉ. रामकुमार बेहार–उपरोक्त, पृष्ठ–89.
9. झा विभा"ा कुमार, डॉ. सौम्या नैयर – छत्तीसगढ़ समग्र– पृष्ठ–339–341, प्रकाशन–छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर 2013
10. उपरोक्त
11. झा विभा"ा कुमार, डॉ. सौम्या नैयर – छत्तीगढ़ समग्र, उपरोक्त, पृष्ठ –344–45
12. शर्मा डॉ. पालेश्वर, डॉ 'ार्मा अभिला"ाा–छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक विरासत, पृ"ठ–162, प्रकाषन मित्तल एंड स दिल्ली 2008
13. साहू गायत्री–छ.ग. में प्रचलित पंथी लोक गीतों का सांस्कृतिक अनुशीलन, पृष्ठ –45, शोध प्रबंध
14. परमार इंदिरा–करमा गीतों में संस्कृति के बोल–नवभारत 24.11.1992 अंक
15. बेहार, डॉ. रामकुमार–छत्तोसगढ़ का इतिहास, पृष्ठ–311, प्रकाशन छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर 2014
16. http//tdil.mit.gov.in/CoilNet/IGNCA/Chgr0043.htm
17. http//www.tdil.mit.gov.in/ggs/sanskritik_Chhattisgarh/Folk Dance.htm.
18. http//tdil.mit.gov.in/coilNet/iGNCA/Chgr0043.htm.
19. झा विभा"ा कुमार, नैयर सौम्या–छत्तीसगढ़ समग्र, पृष्ठ–339, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी 2013
20. शर्मा डॉ. पालेश्वर, शर्मा डॉ. अभिला"ाा, छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ–172, मित्तल एंड संस दिल्ली 2008
21. गोयल डॉ. कुंतल–सैला में छत्तीसगढ़ की झंकार लेख नवभारत 24.11.1992